

---

# Shri Ganeshavajrapanjara Stotram Shrishivakritam

श्रीशिवकृतं श्रीगणेशवज्रपञ्जरस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Shri Ganeshavajrapanjara Stotram Shrishivakritam

File name : gaNeshavajrapanjarastotramshrIshivakRRitaM.itx

Category : ganesha, mudgalapurANa, panjara, stotra, dvAdasha

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Yash Khasbage, Preeti Bhandare

Description/comments : mudgalapurANaM aShTamaH khaNdaH | adhyAyaH 23 | 8.23 19-34||

Latest update : June 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 5, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Ganeshavajrapanara Stotram Shrishivakritam

---

## श्रीशिवकृतं श्रीगणेशवज्रपञ्जरस्तोत्रम्

---



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीशिव उवाच ।

गणेशाय नमस्तुभ्यं विघ्नराजय द्रुष्टये ।

परेशाय च उरम्भाय पाशिने नमो नमः ॥ १८ ॥

भूषकवाडनाथैव नमः परशुपाणये ।

दन्ताभयधरायैव त्रिनेत्राय नमो नमः ॥ २० ॥

शूर्पकण्ठाय वीराय चन्द्ररेभाधराय ते ।

सिन्दूरभूषणायैव रक्तरङ्गाय ते नमः ॥ २१ ॥

उरम्भाय मडाविघ्नवारणाय गजानन ।

आदिपूज्याय सर्वेषां पूज्याय ते नमो नमः ॥ २२ ॥

स्वानन्दवासिने तुभ्यं स्वानन्दमयमूर्तये ।

सर्वाकाराय सर्वेषां मात्रे पित्रे नमो नमः ॥ २३ ॥

अनन्तोदरभावाय ब्रह्मणां पतये नमः ।

ब्रह्मभूताय देवाय दैत्यदानवमर्दिने ॥ २४ ॥

अनन्तविभवायैव भक्तपालनधर्मिणे ।

अभक्तानां विनाशाय भेलकाय नमो नमः ॥ २५ ॥

योगाय योगनाथाय योगिने योगदायिने ।

सदा शान्तिस्वरूपाय शान्तिशाताय ते नमः ॥ २६ ॥

किं स्तौमि त्वां गणेशान् ब्रह्मणस्पतिरूपिणम् ।

योगिनो वेदवेदान्ताः शान्तिं यत्र भजन्ति च ॥ २७ ॥

धन्योऽहं देवपैर्देवैर्भुनिभिर्गणनायक ।

दर्शनात्तेऽद्य पादस्य परात्परतरस्य च ॥ २८ ॥

सामर्थ्यं द्रुष्टि विघ्नेश ज्ञानरूपं त्वयि स्थितम् ।

आज्ञानान्धकनाशार्थं भक्तिं तेऽव्यभियारिणीम् ॥ २९ ॥

अवेमुक्त्वा ननर्ताऽसौ मडादेवः सुरर्षिभिः ।

तं जगाद गाणाधीशो भक्तं भक्तजनप्रियः ॥ ३० ॥

(इलश्रुतिः)

श्रीगणेश उवाच ।

वज्रपञ्चरकं मे त्वं गृह्य दैत्येन्द्रसत्तमम् ।

जडि ज्ञानमयं शम्भो विजयी सर्वदा भव ॥ ३१ ॥

भक्तिं मदीयपादे त्वं लभसेऽनन्यवृत्तिजाम् ।

यद्यद्विच्छसि तत्तत्ते सङ्कलं तु भविष्यति ॥ ३२ ॥

त्वया कृतमिदं स्तोत्रं मदीयं यः पठेन्नरः ।

शृणुयात् स लभेत् सर्वं वाञ्छितं सर्वदा शिव ॥ ३३ ॥

भुक्तिं मुक्तिं पुत्रपौत्रधनधान्यादिकं लभेत् ।

भक्तिं मे ब्रह्मभूतत्वं श्रवणान्नात्र संशयः ॥ ३४ ॥

इति श्रीशिवकृतं श्रीगणेशवज्रपञ्चरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

द्वादशस्तोत्रं

- ॥ मुद्गलपुराणं अष्टमः अर्ऽः । अध्यायः २३ । ८.२३ १९-३४ ॥

- .. mudgalapurANaM aShTamaH khaNDaH . adhyAyaH 23 . 8.23 19-34..

Proofread by Yash Khasbage, Preeti Bhandare

---

—  
*Shri Ganeshavajrapanjara Stotram Shrishivakritam*

pdf was typeset on June 5, 2024

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

